मनोकामना सिद्धि

महावीर व्रत एवं पूजा

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) के
नवग्रहजिनालय में विराजमान भगवान महावीर

लेखिकाःगणिनी ज्ञानमती

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 219
ISBN 978-93-80353-000000

मनोकामना सिद्धि महावीर व्रत एवं पूजा

–: लेखिका :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

परमपूज्य राष्ट्रगौरव, युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के 60वें त्यागदिवस एवं 78वें जन्मदिवस – शरदपूर्णिमा महोत्सव-2011 के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र., फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
E-mail : rk195057@yahoo.com

चतुर्थ संस्करण	वीर नि. सं. 2537, आश्विन शुक्ला 15	मूल्य
1100 प्रतियाँ	11 अक्टूबर 2011, शरदपूर्णिमा	8/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

तृतीय संस्करण-2200 प्रतियाँ (सन् 2006)

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

संसार में दो तरह के मार्ग बताए गये हैं। 1. भक्तिमार्ग 2. निर्वृत्तिमार्ग। जब हम भक्ति मार्ग पर चलेंगे तो हमें निर्वृत्ति मार्ग की अर्थात् मुक्तिमार्ग की प्राप्ति अवश्य हो जाएगी। भक्ति का तात्पर्य मात्र यह नहीं है कि हम दिन में एक बार जिनमंदिर जाकर भगवान का दर्शन कर लें, भक्ति की पूर्णता तो दर्शन, पूजन, वंदन, व्रत, जाप, अनुष्ठान आदि से होती है। व्रतों के बारे में शास्त्रों में अनेकों उदाहरण पढ़ने को मिलते हैं। दुर्गन्धा नामक स्त्री ने रोहिणी व्रत किया तो अगले जन्म में वह हस्तिनापुर के राजा अशोक की रानी रोहिणी हुई और उसे ''रोना क्या होता है ?'' यह भी नहीं मालूम था, रानी पद्मावती ने पूर्वभव में सुगंध दशमी व्रत किया तो अगले भव में उसे अतिसुगंधित शरीर प्राप्त हुआ, सेठ जिनदत्त और सेठानी जयावती ने चन्दनषष्ठी व्रत करके निरोग शरीर प्राप्त किया, गरुड़ नामक विद्याधर ने गरुड़ पंचमी व्रत किया तो उसे अपनी खोई हुई आकाशगामिनी विद्या पुनः सिद्ध हो गई।

इसी शृँखला में भगवान महावीर स्वामी के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने ''भगवान महावीर व्रत'' करने की प्रेरणा प्रदान की। इस व्रत को करने से अनेक प्रकार के मनोरथों की सिद्धि हो जाती है। जो दम्पत्ति पुत्र सुख से वंचित हैं, उन्हें शीघ्र ही पुत्र सुख की प्राप्ति होती है तथा शारीरिक, मानसिक और पारिवारिक शांति की प्राप्ति होती है। आप लोग इस पुस्तक को पढ़कर व्रत को ग्रहण करें तथा व्रत के माध्यम से क्रम-क्रम से दिव्य सुखों का उपयोग करें यही इसकी सार्थकता होगी।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

जैसा कि शास्त्रों में वर्णन आता है कि–

एकापि समर्थेयं, जिनभक्तिर्दुर्गतिं निवारयितुं।
पुण्यानि च पूरयितुं, दातुं मुक्तिश्रियं कृतिनः।।

अर्थात् एकमात्र जिनेन्द्र भगवान की भक्ति ही ऐसी है, जो कि दुर्गति का निवारण करती है, पुण्य को पूर्ण करती है तथा मुक्तिश्री को देने वाली है।

आज भी हम देखते हैं कि भगवान की भक्ति से अनेक प्रकार के छोटे-बड़े कार्य आसानी से सिद्ध हो जाते हैं। अधिक दूर जाने की बात नहीं, हम गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी को ही लें, उन्होंने जब भगवान बाहुबलि की भक्ति की तो विश्व को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर नामक अनुपम तीर्थ प्राप्त हुआ, पुनः उन्होंने भगवान बाहुबलि के पिता अर्थात् तीर्थंकर ऋषभदेव की भक्ति की, तो दुनिया को ''तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली'' नामक अलौकिक तीर्थ प्राप्त हुआ तथा जब उन्होंने भगवान महावीर स्वामी की भक्ति की तो संसार के प्राणियों को ''विश्वशांति महावीर विधान'' नामक स्थाई धरोहर प्राप्त हुई इससे यह स्पष्ट है कि जिनेन्द्रदेव की भक्ति करने से अनेक प्रकार की उपलब्धियाँ सहज में हो जाया करती हैं।

भगवान की स्तुति, पूजा, वंदना, भक्ति के समान ही व्रत भी जिनेन्द्र भक्ति का एक सशक्त माध्यम है। रोहिणी, मेघमाला, सुगंधदशमी, चंदनषष्ठी, आकाशपंचमी, निर्दोषसप्तमी आदि सैकड़ों व्रतों के चमत्कार शास्त्रों में पढ़ने को मिलते हैं उसी शृँखला में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की कृपा से एक और चमत्कारिक व्रत ''मनोकामना सिद्धि भगवान महावीर व्रत'' नाम से हमें प्राप्त हुआ है। भगवान महावीर स्वामी के 2600वें जन्मजयंती महोत्सव के सुअवसर पर बताये गये इस व्रत को करने से सभी मनोकामनाएँ सिद्ध हो जाती हैं, अनेक प्रकार की शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक आपदाएँ नष्ट हो जाती हैं।

आप लोग अधिक से अधिक संख्या में इस व्रत को करके अपने मनवांछित कार्यों की सिद्धि करें, यही मंगलकामना है।

श्री तीर्थंकर महावीर पूजा

–स्थापना - गीता छंद –

प्रभुवीर का छब्बीस सौवां, जन्म उत्सव जग प्रथित।
सब विश्व में लहरा रहा, महावीर प्रभु का धर्मध्वज।।
इन महावीर जिनेन्द्र की, स्थापना विधि हम करें।
निज सौख्य हेतू भक्ति से, अर्चें जनम दुख परिहरें।।1।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकर श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकर श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकर श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

–अथ अष्टक - चौबोलछंद –

गंगा यमुना सरस्वती के, संगम का जल लाया हूँ।
महावीर प्रभु के पद में, त्रयधारा देने आया हूँ।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।।1।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर सुरभित घिसकर, प्रभु चरणों में चर्चूं मैं।
जग संताप दूर करने को, प्रभु चरणों में प्रणमूँ मैं।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।।2।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्जवल शालि सुगंधित लेकर, पुंज चढ़ाऊं प्रभु आगे।
अक्षयपद की प्राप्ति सुखद हो, पुनर्जन्म के दुख भागें।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।।3।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला जुही चमेली सुरभित, पुष्प चढ़ाऊँ चरणों में।
कामदेवमदविजयी प्रभु की, पूजा कर लूँ सुखकर मैं।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।।4।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी गुझिया खाजे ताजे, भरकर थाल चढ़ाऊँ मैं।
क्षुधा वेदनी दूर करो प्रभु, भक्ती से गुण गाऊँ मैं।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।।5।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकर श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतदीपक में ज्योति जलाकर, करूँ आरती भक्ती से।
निज घट का अज्ञान दूर हो, सम्यग्ज्ञान ज्योति प्रगटे।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।।6।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर चंदन से मिश्रित, धूप सुगंधित खेवूँ मैं।
अशुभ कर्म को भस्मसात् कर, आतम अनुभव लेवूँ मैं।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।।7।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकर श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव आम अंगूर सरसफल, भर कर थाल चढ़ाऊँ मैं।
जिनवर सन्निध अर्पण करके, स्वात्मसुधारस पाऊँ मैं।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।।8।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत कुसुमावलि, आदिक अर्घ्य बनाऊँ मैं।
उसमें रत्न मिलाकर अर्पूं, निजगुण मणि को पाऊं मैं।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।।9।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

महावीर अतिवीर, तुम पद पंकज में सदा।
मिले भवोदधि तीर, शांतीधारा मैं करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब, सुरभित करते दश दिशा।
महावीर पादाब्ज, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य– **ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय विश्वशांतिकराय सर्वसौख्यं कुरू कुरू ह्रीं नमः।**

(सुगन्धित पुष्प, लवंग या पीले चावल से 108 मंत्रों का जाप्य करें।)

जयमाला

–शेरछंद –

जय वीर महावीर आप जन्म जब लिया।
संपूर्ण लोक में महा आश्चर्य भर दिया।।
स्वर्गों में कल्पवृक्ष पुष्पवृष्टि कर झुकें।
इन्द्रों के सिंहासन भी आप-आप हिल उठें।।1।।

शीतल सुगंध वायु मंद मंद बही थी।
पृथ्वी भी तो आनंदभरी नाच रही थी।।
संपूर्ण दिशायें गगन भी स्वच्छ हुए थे।
सागर भी तो लहरा रहा हर्षातिरेक से।।2।।

व्यंतर गृहों से भेरियों के शब्द हो उठे।
भवनालयों में शंखनाद गूंजने लगे।।

ज्योतिष गृहों में सिंहनाद स्वयं हो उठा।
सुर कल्पवासि भवन में घंटा भी बज उठा।।3।।

इंद्रों के मुकुट अग्र भी स्वयमेव झुक गये।
जिन जन्म जान आसनों से सब उतर गये।।
तब इन्द्र के आदेश से सुरपंक्ति चल पड़ी।
सबके हृदय में हर्ष की नदियां उमड़ पड़ीं।।4।।

सुरपति प्रभु को गोद में ले गज पे चढ़े हैं।
ईशान इंद्र प्रभु पे छत्र तान खड़े हैं।।
सानत्कुमार औ महेन्द्र चंवर ढोरते।
सब देव देवियां बहुत भक्ती विभोर थे।।5।।

क्षण में सुमेरूगिरि पे जाके प्रभु को बिठाया।
पांडुकशिला पे नाथ का अभिषेक रचाया।।
सौधर्म इन्द्र ने हजार हाथ बनाये।
संपूर्ण स्वर्ण कलश एक साथ उठाये।।6।।

उनसे प्रभू का न्हवन एक साथ कर दिया।
जय जय ध्वनी से देवों ने आकाश भर दिया।।
सब इन्द्र औ इंद्राणियों ने न्हवन किया था।
सब देव औ देवांगनाओं ने भी किया था।।7।।

अभिषेक जल से क्षण में पयोसिंधु बना था।
देवों की सेना डूब रही हर्ष घना था।।
जन्माभिषेक जिन का स्वयं इंद्र कर रहे।
उत्सव विशेष और की फिर बात क्या कहें।।8।।

सुरपति ने पुनः प्रभू को लाके जनक को दिया।
बहु देव और देवियां सेवा में रख दिया।।

सुर धन्य वे जो नाथ संग खेल खेलते।
संसार के दुःख संकटों को वे न झेलते।।9।।

मैं भी करूँ सेवा प्रभु की भक्ति भाव से।
मिथ्यात्व का निर्मूल हो समकित प्रभाव से।।
बस एक प्रार्थना पे नाथ ! ध्यान दीजिये।
सज्ज्ञानमती पूर्ण हो ये दान दीजिये।।10।।

–दोहा –

वर्धमान गुणरत्न को, गिनत न पावहिं पार।
तीन रत्न के हेतु में, नमूं अनंतों बार।।11।।

ॐ ह्रीं अंतिमतीर्थंकर श्रीमहावीरजिनेंद्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा –

वर्द्धमान जिन वीरप्रभु , श्रीसन्मति महावीर।
महति महावीर आपको, जजत मिले भवतीर।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

मनोकामना सिद्धि भगवान महावीर व्रत विधि

जैनशासन में पर्वों की भांति ही अनादिकाल से व्रतों की परम्परा भी चली आ रही है जिनमें दो प्रकार के व्रत प्रचलित हैं-1. सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, आष्टान्हिका, रत्नत्रय आदि पर्वों में किये जाने वाले व्रत अनादि कहलाते हैं तथा रोहिणी, रविव्रत, पंचकल्याणक आदि व्रत सादि कहलाते हैं। इनमें ही अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के नाम से मनोकामना सिद्धि महावीर व्रत भी विशेष महिमाशाली व्रत है। पुत्रप्राप्ति तथा अन्य इच्छित फल की प्राप्ति हेतु इस व्रत को किया जाता है। इस व्रत में 108 उपवास किये जाते हैं तथा व्रत वाले दिन 1-1 मंत्र की जाप दिन में तीन बार करना चाहिए। व्रत की उत्तम विधि उपवासपूर्वक है, मध्यम में जल आदि पेय वस्तु दिन में एक बार ली जाती है तथा दिन में एक बार शुद्ध भोजन करना एकाशन कहलाता है यह जघन्यविधि है।

इस व्रत को करने में तिथि का कोई बंधन नहीं है अपनी सुविधा के अनुसार महीने में कम से कम एक व्रत अवश्य करें तथा अधिक से अधिक जितने व्रत चाहें, कर सकते हैं।

व्रत को स्त्री-पुरुष, बालक-बालिकाएँ सभी को अपनी शक्ति के अनुसार करना चाहिए। व्रत वाले दिन भगवान महावीर का अभिषेक-पूजन करें तथा भगवान महावीर का संक्षिप्त जीवनदर्शन आदि पढ़कर धर्मध्यान में दिन को व्यतीत करना चाहिए।

व्रत के उद्यापन में भगवान महावीर की प्रतिमा बनवाकर मंदिर में विराजमान करें, विश्वशांति महावीर विधान का आयोजन करें, मंदिर में यथोचित उपकरण आदि दान दें, भगवान महावीर से संबंधित साहित्य छपाकर वितरित करें तथा 108 लोगों को या कम से कम 24 लोगों को 3-3 फल वितरित करें।

इस व्रत की जाप्य निम्न प्रकार है–

समुच्चय जाप्य–**ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय विश्वशांतिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।**

महावीर व्रत मंत्र

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनशुद्धिप्राप्तकारकाय दर्शनविशुद्धिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विधविनयगुणप्रापणसमर्थाय विनयसंपन्नताभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं निरतिचारव्रतशीलादिपालनबुद्धिप्रदायकाय शीलव्रतेष्वनति-चारभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं सततज्ञानाभ्यासकरणसमर्थाय अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं संसारशरीरभोगवैराग्यकरणबुद्धिप्रदायकाय संवेगभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रयधारणबुद्धिकरणसमर्थाय शक्तितस्त्यागभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं नानाविधतपश्चरणकरणशक्तिप्रदायकाय शक्तितस्तपो-भावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं साधुगणधर्म्यशुक्लध्यानलीनभक्तिशक्तिप्रापकाय साधुसमाधि-भावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं गुरुसेवाकरणशक्तिप्रदायकाय वैयावृत्यकरणभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं मनोवांछितफलदानसमर्थाय अर्हद्भक्तिभावनाबलेन तीर्थंकर-पदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रधारणशक्तिदानसमर्थाय आचार्यभक्तिभावना-बलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानपूर्णकरणसमर्थाय बहुश्रुतभक्तिभावनाबलेन तीर्थंकर-पदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं चतुर्विधसंघभक्तिभावनावर्द्धकाय प्रवचनभक्तिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं षडावश्यकक्रियाकरणशक्तिप्रदाय आवश्यकापरिहाणिभावना-बलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं जिनधर्मप्रभावनाकरणबुद्धिवृद्धिंकराय मार्गप्रभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।15।।

ॐ ह्रीं साधर्मिवात्सल्यबुद्धिकरणसमर्थाय प्रवचनवत्सलत्वभावना-बलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्योत्तमपदधारिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुरैरावतहस्तिशुभ-स्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं समस्तलोकज्येष्ठपदधारकपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुर्महा-वृषभशुभस्वप्न प्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं अनन्तबलशालिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःसिंहशुभस्वप्न-प्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं सद्धर्मतीर्थप्रवर्तनकारिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःस्रग्युग्मशुभ-स्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं सुरेन्द्रकृतसुमेरुशिखराभिषेकप्राप्तपदधारिपुत्रजन्मफलसूचकाय मार्तुलक्ष्मीशुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वजनाल्हादनकारिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुश्चन्द्रशुभस्वप्न-प्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं भास्करद्युतिधारकपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःसूर्यशुभस्वप्न-प्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं निधिस्वामिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःकुंभयुगलशुभस्वप्न-प्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं अतिशयसौख्यधारकपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुर्मत्स्ययुग्मशुभ-स्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्टलक्षणोद्भासिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःसरोवरशुभ-स्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानोपलब्धिकृतपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःसमुद्रशुभ-स्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं जगद्गुरुसाम्राज्यधारिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःसिंहासन-शुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं स्वर्गावतारिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःस्वर्विमानशुभस्वप्न-प्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं अवधिज्ञानलोचनधारिपुत्रजन्मसूचकाय मातुर्धरणेन्द्रभवनशुभ-स्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं गुणाकरस्वरूपपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःप्रोद्यद्रत्नराशीक्षण-शुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं कर्मेन्धनदहनकारकपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुर्निर्धूमज्वलने-क्षण-शुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं शरीरस्वास्थ्यप्रदायकाय निःस्वेदत्वसहजातिशयगुणमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।33।।

ॐ ह्रीं स्वात्मविशुद्धिप्रदायकाय मलविरहितसहजातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

ॐ ह्रीं समरसीभावप्रदायकाय क्षीरसमरुधिरत्वसहजातिशय-गुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

ॐ ह्रीं निजात्मशक्तिवर्धकाय वज्रऋषभनाराचसंहननसहजातिशय-गुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

ॐ ह्रीं स्वात्मसौख्यप्रदायकाय समचतुरस्रसंस्थानसहजातिशय-गुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

ॐ ह्रीं इन्द्रनरेन्द्र-धरणेन्द्रखगेन्द्रनेत्रमनोहारिसौंदर्यसमन्विताय अनुपमरूपसहजातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

ॐ ह्रीं स्वात्मसुयशोविस्तारकाय सौगन्ध्यसहजातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

ॐ ह्रीं अशुभकर्मनिवारकाय अष्टोत्तरसहस्रशुभलक्षणसहजातिशय-गुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

ॐ ह्रीं आत्मबलवर्धकाय अनन्तबलवीर्यसहजातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

ॐ ह्रीं कण्ठाकुंठितफलप्रदाय प्रियहितमधुरवचनसहजातिशयगुण-मंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

ॐ ह्रीं सर्वत्र क्षेमकराय गव्यूतिशतचतुष्टयसुभिक्षताकेवलज्ञानाति-शयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

ॐ ह्रीं उत्तमगतिप्रदायकाय गगनगमनत्वकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

ॐ ह्रीं अनुकंपागुणविकसिताय प्राणिवधाभावकेवलज्ञानातिशयगुण-मण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

ॐ ह्रीं आहारशुद्धिफलप्रदायकाय कवलाहाराभावकेवलज्ञानातिशय-गुणमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारणसमर्थाय उपसर्गाभावकेवलज्ञानातिशय-गुणमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

ॐ ह्रीं सर्वजनमनोहराय चतुर्मुखत्वकेवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

ॐ ह्रीं भगवच्छत्रछायाप्रापकाय छायारहितकेवलज्ञानातिशय-गुणमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।

ॐ ह्रीं ज्ञाननेत्रप्रदायकाय पक्ष्मस्पंदरहितकेवलज्ञानातिशय-गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।

ॐ ह्रीं स्वात्मतत्त्वज्ञानप्रापकाय सर्वविद्येश्वरताकेवलज्ञानातिशय-गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।

ॐ ह्रीं सर्वजनताभयदानदायकाय नखकेशवृद्धिरहितकेवलज्ञानाति-शयगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानप्राप्तिकराय अक्षरानक्षरात्मकसर्वभाषामयदिव्य-ध्वनिकेवलज्ञानातिशयगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।

ॐ ह्रीं सर्वजनमनःकमलविकासकाय सर्वर्तुफलादिशोभिततरु-परिणामदेवोपनीतातिशयगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।

ॐ ह्रीं उष्णपित्तादिरोगनिवारकाय वायुकुमारोपशमितधूलिकण्टकादि-देवोपनीतातिशयगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।55।।

ॐ ह्रीं सर्वजनविरोधनिवारकाय सर्वजनमैत्रीभावदेवोपनीतातिशय-गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। 56।।

ॐ ह्रीं सर्वकष्टनिवारणकराय आदर्शतलप्रतिमारत्नमयीमहीदेवो-पनीतातिशयगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।57।।

ॐ ह्रीं रक्तपित्तविस्फोटकादिनानाव्याधिनिवारकाय मेघकुमारकृत-गंधोदकवृष्टिदेवोपनीतातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।58।।

ॐ ह्रीं सर्वोत्तमफलप्रदानसमर्थाय फलभारनम्रशालिदेवोपनीतातिशय-गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।59।।

ॐ ह्रीं परमसौख्यप्रदायकाय सर्वजनपरमानन्दत्वदेवोपनीतातिशय-गुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।60।।

ॐ ह्रीं प्रतिकूलजनापसारकाय अनुकूलविहरणवायुत्वदेवोपनीतातिशयगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।61।।

ॐ ह्रीं स्वात्मसुधारसप्रदायकाय निर्मलजलपूर्णकूपसरोवरादिदेवोपनीतातिशयगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।62।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिग्यशोविस्तारकाय शरत्कालवन्निर्मलाकाशदेवोपनीतातिशयगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।63।।

ॐ ह्रीं परमस्वास्थ्यविधायकाय सर्वजनरोगशोकबाधारहितत्वदेवोपनीतातिशयगुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।64।।

ॐ ह्रीं सद्धर्मबुद्धिविवर्धकाय यक्षेन्द्रमस्तकोपरिस्थितधर्मचक्रचतुष्टय-देवोपनीतातिशयगुणमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।65।।

ॐ ह्रीं चतुर्गतिभ्रमणनिवारणसमर्थाय तीर्थंकरदेवचरणकमलतलस्वर्ण-कमलरचनादेवोपनीतातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।66।।

ॐ ह्रीं संपूर्णशोकनिवारणसमर्थाय अशोकवृक्षमहाप्रातिहार्यगुण-मंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।67।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनसौख्यसाधनकराय छत्रत्त्रयमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।68।।

ॐ ह्रीं सर्वजनपूज्यपददायकाय सिंहासनमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।69।।

ॐ ह्रीं असंख्यप्राणिगणानुग्रहकारकाय द्वादशगणवेष्टितमहाप्रातिहार्य-गुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।70।।

ॐ ह्रीं जिनधर्मप्रभावकाय देवदुंदुभिमहाप्रातिहार्यगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।71।।

ॐ ह्रीं गुणसुरभिप्रसारकाय सुरपुष्पवृष्टिमहाप्रातिहार्यगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।72।।

ॐ ह्रीं स्वात्मप्रभाविस्तारकाय भामंडलमहाप्रातिहार्यगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।73।।

ॐ ह्रीं सर्वजनमनःप्रियकराय चतुःषष्टिचामरमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।74।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्मक्षपणयुक्तिप्रदाय अनन्तज्ञानगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।75।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणकर्मक्षपणयुक्तिप्रदाय अनन्तदर्शनगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।76।।

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मनाशनबुद्धिप्रदाय अनंतसौख्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।77।।

ॐ ह्रीं अन्तरायकर्मविनाशनबुद्धिप्रदाय अनंतवीर्यगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।78।।

ॐ ह्रीं स्वात्मसंतुष्टिकारकाय क्षुधामहादोषविरहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।79।।

ॐ ह्रीं संसारसंतापनिवारकाय तृषामहादोषविरहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।80।।

ॐ ह्रीं सप्तभयविरहितनिर्दोषसम्यक्त्वप्रदाय भयमहादोषविरहिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।81।।

ॐ ह्रीं क्षमाभावप्रदायकाय क्रोधमहादोषविरहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।82।।

ॐ ह्रीं स्वात्मचिंतनबुद्धिप्रदाय चिन्तामहादोषविरहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।83।।

ॐ ह्रीं परमौदारिकदिव्यदेहप्रदाय जरामहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।84।।

ॐ ह्रीं सरागवीतरागसम्यक्त्वप्रदाय रागमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।85।।

ॐ ह्रीं बहिरात्मबुद्धिनिवारकाय मोहमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।86।।

ॐ ह्रीं नानाव्याधिनिवारणसमर्थाय रोगमहादोषविरहिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।87।।

ॐ ह्रीं यमराजजयबुद्धिप्रदाय मृत्युमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।88।।

ॐ ह्रीं शरीरश्रमापनुदनयुक्तिप्रदाय स्वेदमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।89।।

ॐ ह्रीं परमाल्हादसौख्यप्रदायकाय विषादमहादोषविरहिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।90।।

ॐ ह्रीं अष्टविधमदनिवारणबुद्धिप्रदाय मदमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।91।।

ॐ ह्रीं स्वात्मरमणबुद्धिप्रदायकाय रतिमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।92।।

ॐ ह्रीं परमाश्चर्यस्वरूपसिद्धिपदसाधनकराय विस्मयमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।93।।

ॐ ह्रीं मुक्तिपदसाधनालस्यनिवारकाय निद्रामहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।94।।

ॐ ह्रीं पुनःपुनर्भवनिवारकाय जन्ममहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।95।।

ॐ ह्रीं द्वेषबुद्धिनाशनयुक्तिप्रदाय अरतिमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।96।।

ॐ ह्रीं सुदर्शानमेरुपर्वतोपरिजन्माभिषेकानन्तर इंद्रकृतवर्धमाननामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।97।।

ॐ ह्रीं बाल्यकालसंजयविजयमुनिद्वयशंकासमाधानप्राप्तसमयमहामुनिकृतसन्मतिनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।98।।

ॐ ह्रीं देवबालकसार्धक्रीडासमयसंगमदेवकृतमहाफणधररोपसर्गविजयितद्देवकृतमहावीरनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।99।।

ॐ ह्रीं अतिमुक्तकवनमध्यध्यानस्थकालरूद्रकृतमहोपसर्गविजयसमयतन्महादेवकृतमहतिमहावीरनाममण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।100।।

ॐ ह्रीं गणधरदेवादिस्वामिने महायोगीश्वरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।101।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मनिर्मुक्तसाक्षात्सिद्धपदप्राप्ताय द्रव्यसिद्धगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।102।।

ॐ ह्रीं परमौदारिकतैजसकार्मणत्रयदेहविरहिताय अदेहगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।103।।

ॐ ह्रीं संसारमध्यपुनरागमनविरहिताय अपुनर्भवगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।104।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमयीचेतनागुणविशिष्टाय ज्ञानैकचिद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।105।।

ॐ ह्रीं अन्यसंश्लेषरहितस्वात्मनिष्पन्नजीवमयाय जीवघनगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।106।।

ॐ ह्रीं स्वात्मोपलब्धिरूपपदप्राप्ताय सिद्धनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।107।।

ॐ ह्रीं तनुवातवलयस्थितसिद्धशिलोपरिगमनस्वभावाय लोकाग्रगामुकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।108।।

भगवान महावीर जीवन परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में आर्यखण्ड है। इस आर्यखण्ड में विदेह नाम से एक प्रसिद्ध देश माना गया है। कभी यह खेट, खर्वट, मटम्ब, पुटभेदन, आकर-स्वर्ण, चांदी की खान, खेत, ग्राम और घोषों से विभूषित था। इस देश की राजधानी कुण्डलपुर प्रसिद्ध थी। यह परकोटा एवं खाई आदि से विभूषित बहुत ही वैभवपूर्ण नगरी थी। इस नगर के गुणों का वर्णन तो इतने से ही पर्याप्त हो जाता है कि वह नगर स्वर्ग से अवतार लेते समय महावीर का आधार हुआ था अर्थात् साक्षात् महावीर स्वामी ने जहाँ अवतार लिया था।

यहाँ के राजा सर्वार्थ महाराज थे और उनकी महारानी का नाम श्रीमती था। इनके पुत्र का नाम सिद्धार्थ था। इनकी रानी वैशाली के महाराजा चेटक की पुत्री प्रियकारिणी थी जिनका दूसरा नाम त्रिशला था। जो राजा सिद्धार्थ वर्तमान में भगवान वर्धमान के पितृपद को प्राप्त हुए थे भला उनके उत्कृष्ट गुणों का वर्णन कौन कर सकता है? तथा अपने पुण्य से तीर्थंकर महावीर को जन्म देने वाली उन त्रिशला माता के गुणों का वर्णन भी कोई मनुष्य नहीं कर सकता है।

अब भगवान महावीर के नाना के कुल का संक्षिप्त वर्णन आपके लिए प्रस्तुत है-

वैशाली नगर में चेटक नाम के प्रसिद्ध राजा थे। इनकी रानी का नाम सुभद्रा था। इनके दश पुत्र थे जिनके नाम धनदत्त, धनभद्र, उपेन्द्र, शिवदत्त, हरिदत्त, कम्बोज, कम्पन, प्रयंग, प्रभंजन और प्रभास थे, ये दशों ऋद्धियों के समान ही निर्मल गुणों से विभूषित थे। इन्हीं राजा चेटक की महारानी ने सात ऋद्धियों के समान ही सात पुत्रियों को जन्म

दिया था जो क्रमशः प्रियकारिणी, मृगावती, सुप्रभा, चेलिनी, ज्येष्ठा और चन्दना इन नाम को धारण करने वाली थीं।

भगवान महावीर होने वाले महापुरूष सोलहवें स्वर्ग के पुष्पोत्तर विमान में थे। जब उनकी आयु मात्र छह महिने की शेष रही तब सोधर्मेन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने कुण्डलपुर नगरी में रानी त्रिशला के आंगन में रत्नों की वर्षा करना शुरू कर दी। ये रत्न प्रतिदिन साढ़े तीन करोड़ बरसते थे। एक दिन महारानी त्रिशला अपने ''नंद्यावर्त'' महल में रत्ननिर्मित पलंग पर सोई हुई थीं, आषाढ़ शुक्ला षष्ठी के दिन पिछली रात्रि में रानी ने सोलह स्वप्न देखे, प्रातः पतिदेव से उनका फल पूछने पर ''आप तीर्थंकर पुत्र को जन्म देंगी'' ऐसा सुनकर प्रसन्नता को प्राप्त हुईं। नवमाह व्यतीत होने पर चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को माता त्रिशला ने पुत्र रत्न को जन्म दिया तब इन्द्रगण असंख्य देवपरिवारों के साथ आकर बालक को ऐरावत हाथी पर बिठाकर सुमेरूपर्वत पर पहुंचे और वहाँ स्वर्णमयी जल से भरे ऐसे 1008 कलशों से प्रभु का जन्माभिषेक किया, अनन्तर आभूषण आदि से जिनबालक को विभूषित कर ''वीर'' और ''वर्धमान'' ऐसे दो नाम प्रसिद्ध किये थे।

एक बार ''संजय'' और ''विजय'' नाम के दो चारणऋद्धिधारी महामुनियों को किसी पदार्थ में संदेह उत्पन्न हो गया तब जन्म के बाद ही पालने में झूल रहे जिनशिशु के समीप आए। भगवान के दर्शनमात्र से उनका संदेह दूर हो गया। तब उन महासाधुओं ने ''सन्मति'' इस नाम से शिशु को संबोधित किया था।

किसी एक दिन स्वर्ग में प्रभु की शूरवीरता की चर्चा चल रही थी। उसे सुनकर ''संगम'' देव ने उनकी परीक्षा करने की भावना की। उस समय वर्धमान कुमार उद्यान में अनेक राजकुमारों के साथ वृक्ष पर चढ़ने-उतरने का खेल खेल रहे थे, तभी संगमदेव महासर्प का रूप

धारणकर वृक्ष में नीचे से ऊपर तक लिपट गया। सभी बालक डरकर भागने लगे किन्तु जिनवीर ने सर्प के मस्तक पर पैर रखकर ऐसी क्रीड़ा की कि जैसे माता के पलंग पर खेल रहे हों। तब संगमदेव ने अपना रूप प्रगटकर प्रभु की नाना स्तुति करके ''महावीर'' यह नाम रखा।

तीस वर्ष की अवस्था में भगवान ने मगसिर कृष्णा दशमी को सालवृक्ष के नीचे दीक्षा ले ली। जब भगवान महामुनि के वेष में आहार के लिए निकले तो प्रथम आहार का लाभ ''वकुल'' ग्राम के राजा ''कूल'' को प्राप्त हुआ।

तपश्चर्या करते हुए भगवान एक बार उज्जयिनी के बाहर ''अतिमुक्तक'' नाम के श्मशान में ध्यानलीन थे, उन्हें देखकर ''स्थाणु'' नामक रूद्र ने उनके ऊपर अनेक प्रकार से उपसर्ग करना प्रारम्भ किया परन्तु भगवान को विचलित न होते देखकर रूद्र ने प्रभावित होकर प्रभु का नाम ''महति महावीर'' रखा। कहीं-कहीं अतिवीर नाम भी आता है।

बारह वर्ष की तपस्या के बाद भगवान महावीर को जृंभिकाग्राम के निकट ऋजुकूला नदी के तट पर मनोहर नामक उद्यान में वैशाख शुक्ला दशमी के दिन दिव्य केवलज्ञान की प्राप्ति हुई तत्क्षण ही इन्द्र ने समवसरण की रचना की।

केवलज्ञान प्राप्ति के 30 वर्ष बाद कार्तिक कृष्णा अमावस को भगवान पावापुरी में सरोवर के मध्य से आकाश में अधर ही सर्वकर्मों को नष्ट करके निर्वाणपद को प्राप्त हो गये। ये अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हमारे और आप सबके लिए मंगलकारी होवें।

भगवान श्री महावीर स्वामी की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–मन डोले, मेरा.....

जय वीर प्रभो, महावीर प्रभो, की मंगल दीप प्रजाल के
मैं आज उतारूं आरतिया।।टेक.।।
सुदी छट्ठ आषाढ़ प्रभूजी, त्रिशला के उर आए।
पन्द्रह महिने तक कुबेर ने, बहुत रत्न बरसाये।।प्रभू जी.।।
कुण्डलपुर की, जनता हरषी, प्रभु गर्भागम कल्याण पे,
मैं आज उतारूं आरतिया।।1।।
धन्य हुई कुण्डलपुर नगरी, जन्म जहां प्रभु लीना।
चैत्र सुदी तेरस के दिन, वहां इन्द्र महोत्सव कीना।।प्रभू जी.।।
काश्यप कुल के, भूषण तुम थे, बस एकमात्र अवतार थे,
मैं आज उतारूं आरतिया।।2।।
यौवन में दीक्षा धारण कर, राजपाट सब त्यागा।
मगशिर असित मनोहर दशमी, मोह अंधेरा भागा।।प्रभू जी.।।
बन बालयती, त्रैलोक्यपती, चल दिए मुक्ति के द्वार पे,
मैं आज उतारूं आरतिया।।3।।
शुक्ल दशमि वैशाख में तुमको, केवलज्ञान हुआ था।
गौतम गणधर ने आ तुमको, गुरु स्वीकार किया था।।प्रभू जी.।।
तव दिव्यध्वनी, सब जग ने सुनी, तुमको माना भगवान है,
मैं आज उतारूं आरतिया।।4।।
पावापुरि सरवर में तुमने, योग निरोध किया था।
कार्तिक कृष्ण अमावस के दिन, मोक्ष प्रवेश किया था।।प्रभू जी.।।
निर्वाण हुआ, कल्याण हुआ, दीपोत्सव हुआ संसार में,
मैं आज उतारूं आरतिया।।5।।
वर्धमान सन्मति अतिवीरा, मुझको ऐसा वर दो ।
कहे 'चंदनामती' हृदय में, ज्ञान की ज्योति भर दो। प्रभू जी.।।
अतिशयकारी, मंगलकारी, ये कल्पवृक्ष भगवान हैं,
मैं आज उतारूं आरतिया।।6।।